

## भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में गाँधी के अहिंसात्मक प्रयोग

डॉ० विकास शर्मा<sup>1</sup>

<sup>1</sup>सहायक आचार्य, समाज कार्य विभाग, जैन विश्वभारती, संस्थान, लाडनूँ।

महात्मा गांधी विश्व की महान् विभूतियों में से एक है, जिन्होंने भारत को ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व को अहिंसा का मार्ग दिखलाया। गांधीजी के प्रयोगों तथा विचारों को अपनाकर ही सम्पूर्ण भारत में अहिंसा का प्रकाश फैलाया जा सकता है। महात्मा गांधी एक महान् विचारक तथा आन्दोलनकारी थे। उन्होंने विचारों के साथ-साथ अहिंसक प्रयोगों को भी महत्व दिया।

महात्मा गांधी के सिद्धांत और व्यवहार की जब हम बात करते हैं तो हमारा प्रथम पड़ाव दक्षिणी अफ्रीका होता है, इस सन्दर्भ में विशेष रूप से उल्लेखनीय बात यह है कि सिद्धांत के साथ ही अहिंसक प्रयोगों की शुरुआत पहले दक्षिणी अफ्रीका में ही हुई। महात्मा गांधी का दक्षिणी अफ्रीका का अनुभव व उनके प्रयोग अहिंसा के सिद्धान्त और व्यवहार के परिप्रेक्ष्य में मील के पत्थर साबित हुए।

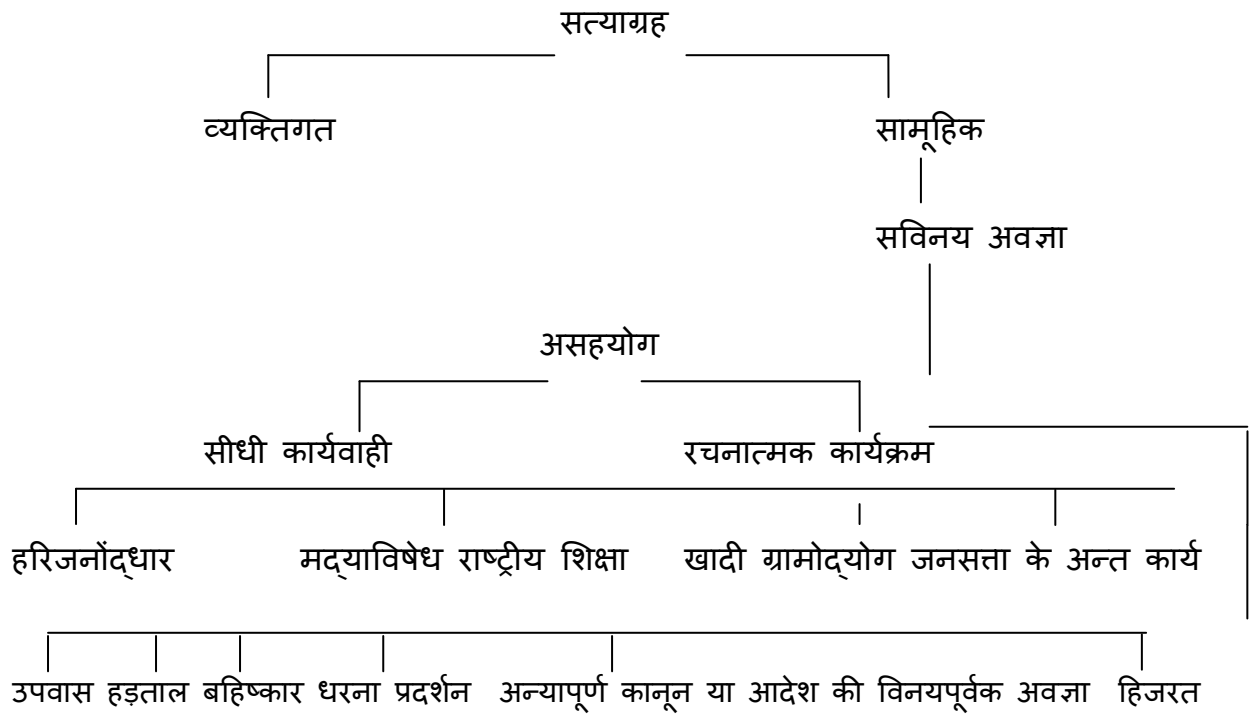
वर्षों तक दक्षिण अफ्रीका में रहकर न्याय और स्वतंत्रता के लिए गांधी ने कई अहिंसक प्रयोग किए। मानवता की प्रगति के लिए उन्होंने कई प्रयोग किए। उन्होंने अपने सिद्धान्तों की नींव वहीं रखी और वहीं उन पर व्यवहार करके दुनिया को आश्चर्यचकित कर दिया। दक्षिण अफ्रीका से महात्मा गांधी भारत की धरती पर लौटे, यहां भी अंग्रेजों का राज्य था। गांधीजी ने पूरे भारत का भ्रमण किया तथा यहां कि स्थिति का अवलोकन किया।

उन्होंने 1917, चम्पारन में किसानों को अंग्रेजी शोषण से मुक्ति दिलाकर भारत के लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया। यह तो एक शुरुआत थी, उसके बाद गांधीजी जब तक शान्त नहीं बैठे, तब तक अंग्रेजों को भारत की धरती से विदा नहीं कर दिया। एक या दो नहीं, दर्जन भर से अधिक आन्दोलन गांधी के नेतृत्व में 1917 से 1947 तक 30 वर्षों की अवधि में विभिन्न रूपों में शोषण और अन्याय को समाप्त करने के लिए प्रारम्भ किए गए। महात्मा गांधी के प्रमुख अहिंसक आन्दोलनों में असहयोग, सविनय अवज्ञा तथा भारत छोड़ो आन्दोलन प्रमुख रहे। इन्हीं आन्दोलनों के आधार पर देश को स्वतंत्रता मिली तथा स्वतंत्रता के बाद भी कई लोगों ने गांधीजी के सिद्धान्तों और प्रयोगों को अपनाया और वर्तमान में भी कई योजनाएं गांधीजी के विचारों के आधार पर ही क्रियान्वित हो रही हैं जिससे गांधीजी का सर्वोदय का सपना साकार होने की दिशा में है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, इस लोकतांत्रिक पद्धति में उनके प्रयोगों की महत्ता और भी अधिक बढ़ जाती है, यह हमें समझना होगा। महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन एक जन आन्दोलन का रूप लेता है, जिसके साथ वह भारत में राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष के महानायक के रूप में प्रस्तुत होते हैं। संघर्ष के लक्ष्य सुस्पष्ट हों और उसकी दिशा साफ बनी

रहें तथा संघर्ष पथ भ्रष्ट या दिग्भ्रमित नहीं हो जाय, इसलिए उन्होंने कुछ दार्शनिक मान्यताएं स्थापित की। यह स्थापनायें भी किसी कोरी काल्पनिकता पर आधारित नहीं होकर उनके जीवन के प्रयोगों की व्यावहारिक कसौटी पर कसकर ही स्वीकार की गयी थी। गांधी को सत्य की शक्ति एवं ऊर्जा में अटूट विश्वास था और वह मानते थे कि शक्ति का एक-एक कण पर्वत से भी अधिक शक्तिशाली है। इस आत्मिक विश्वास पर आधारित प्रयोगों के माध्यम से सत्य के आत्म साक्षात्कार तथा आध्यात्मिक एवं नैतिक प्रतिबद्धता से युक्त जीवन की अनुभूतियों पर आधारित गांधीवाद का इस तरह वैज्ञानिक स्वरूप प्रस्तुत होता है।<sup>1</sup>

महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय आन्दोलन में सत्याग्रह को न केवल व्यावहारिक प्रयोग में साकार किया बल्कि उसे जनाभिमुख भी बनाया। सत्याग्रह के विविध स्वरूपों से जुड़े उनके प्रयोगों की लोकप्रियता ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में एक युगान्तकारी अध्याय का सृजन करते हुए उसे जनआन्दोलन के दौर में पहुंचाया। सत्याग्रह को दुनिया के सबसे बड़े स्वतंत्रता संघर्ष में आम आदमी से जुड़े व्यापक फलक पर सफलतापूर्वक स्थापित करने के बावजूद गांधी सत्याग्रह के प्रयोग के प्रति सजगता एवं सावधानी के कायल थे।

असहयोग और सविनय अवज्ञा के रूप में गांधीजी के सत्याग्रह आन्दोलनों के दो स्वरूप राष्ट्रीय आन्दोलन काल में सामने आते हैं। असहयोग एवं सविनय अवज्ञा, सत्याग्रह के सामूहिक स्वरूप का प्रकटीकरण करते हैं। इसके अतिरिक्त सत्याग्रह व्यक्तिगत भी होता है, जिसमें व्यक्ति निजी हैसियत में आन्दोलनात्मक सीधी कार्यवाही या सविनय अवज्ञा के माध्यम अपनाता है। गांधीजी ने सत्याग्रह का परीक्षात्मक प्रयोग जहां 1916 में चम्पारन में किया, वहीं सन् 1920 में असहयोग के माध्यम से उसका व्यापक राष्ट्रीय स्तर पर भारी जनसहभागिता के साथ प्रयोग किया। महात्मा गांधी ने सत्याग्रह के माध्यम से जिस तरह के आन्दोलनात्मक प्रयोग भारतीय राजनीति के स्वतंत्रता संघर्ष के दौर में किये उसके कई स्वरूप हो।



व्यक्तिगत अहिंसात्मक प्रयोग-व्यक्तिगत सत्याग्रह में सत्याग्रह का प्रयोग व्यक्ति द्वारा व्यक्तिगत उद्देश्यों के लिए हो सकता है। गान्धीजी ने 1940 में प्रथम व्यक्तिगत सत्याग्रही विनोबा भावे को घोषित किया।

असहयोग-यह सार्वजनिक या सामूहिक सत्याग्रह का प्रथम स्वरूप है जिसका प्रयोग गान्धीजी ने चंपारन सत्याग्रह के परीक्षात्मक प्रयोग के बाद राष्ट्रीय स्तर पर सबसे पहले सत्याग्रह आन्दोलन के रूप में किया। असहयोग का अर्थ है भ्रष्ट या अन्यायपूर्ण राजतंत्र से हर तरह के सहयोग को भंग कर देना।<sup>2</sup>

गान्धीजी के अनुसार असहयोग से अधिक साफ-सुथरा नुकसानरहित और प्रभावपूर्ण उपकरण हो ही नहीं सकता। इसे न्यायपूर्ण ढंग से क्रियान्वित किया जाना चाहिए। इससे किसी खराब परिणाम की कोई उम्मीद नहीं होती।<sup>3</sup>

यह निष्क्रिय नहीं पूरी तरह सक्रिय एवं प्रभावी अवस्था है। हिंसा का मार्ग कभी इतना प्रभावी नहीं हो सकता। गान्धीजी ने कहा कि मेरे लिए असहयोग की जो कल्पना है, उसके अनुसार उसे पूरी तरह अहिंसक, कसौ के प्रति बुरी नीयत या उसे दुःख पहुंचाने या किसी को क्षति पहुंचाने की भावना से परे होना चाहिए।<sup>4</sup>

हिंसारहित होने से असहयोग का प्रभाव बहुत बढ़ जाता है।<sup>5</sup>

असहयोग व्यक्ति के विरुद्ध नहीं व्यवस्था के विरुद्ध होता है। वह गवर्नर के विरुद्ध नहीं, उस व्यवस्था के विरुद्ध है जिसका वह प्रशासन करता है।<sup>6</sup>

गान्धीजी की दृढ़ धारणा थी कि असहयोग का न केवल विश्वजनित प्रयोग सम्भव है, बल्कि राजनीति के प्रयोगार्थ यह अत्यन्त उपादेय उपकरण है। राजनीति में यह परस्पर विद्वेष के बर्बर हथियारों की जगह ले सकता है।<sup>7</sup>

सविनय अवज्ञा-यह सत्याग्रह का दूसरा प्रमुख रूप है। इसमें कानून या आदेश विशेष अथवा सम्पूर्ण शासन की विनयपूर्वक अवज्ञा द्वारा उसका विरोध किया जाता है और इस तरह उसकी सत्ता को नैतिक दृष्टि से कमजोर बनाना अभीष्ट होता है। गान्धीजी ने सविनय अवज्ञा का आन्दोलन सन् 1930 में छः अप्रैल को दाण्डी में समूद्री पानी से नमक बनाकर पहली बार आरम्भ किया। इसे नमक सत्याग्रह भी कहा गया। एक साधारण कानून की अवज्ञा के इस सत्याग्रह ने भारतीय राजनीति में असाधारण हलचल पैदा की, जिससे भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के वजूद को धक्का लगा। इस प्रयोग ने साबित कर दिया कि शांतिपूर्वक और अहिंसक सविनय अवज्ञा सत्याग्रह द्वारा शासन को ठप किया जा सकता है। यह सशस्त्र विद्रोह से अधिक प्रभावी और खतरनाक होता है। यदि सविनय अवज्ञा सत्याग्रही हर तरह के असीम कष्ट एवं यातना सहन करने के लिए तैयार हो तो ऐसे संघर्ष को कभी पराजित नहीं किया जा सकता।<sup>8</sup>

ऐसे संघर्ष की तैयारियों की कसौटी है अनुशासन, शक्ति और ईश्वर के विधान में गहरी आस्था के साथ कष्ट सहने का असीम संकल्प।<sup>9</sup>

महात्मा गान्धी के शब्दों में कई बार सविनय अवज्ञा में सीधे प्रेम की मांग होती है। यह निश्चिततः खतरनाक है, लेकिन हिंसा के घेरे से अधिक (फिर भी) नहीं। हृदय विदिर्ण करने वाली आत्मा से अहिंसक रूप में बचाव केवल सविनय अवज्ञा से ही हो सकता है। खतरा एक ही दिशा में होता है और वह सविनय अवज्ञा के साथ-साथ हिंसा फूट पड़ना। यदि ऐसा होता है, तो फिर आगे के मार्ग का भी मुझे ज्ञान है। बारडोली के समय किए गए अवलोकन की ओर जाने की आवश्यकता नहीं होगी। हिंसा के विरुद्ध देश की स्वाधीनता का अहिंसक संग्राम, भले ही हिंसा का स्रोत कुछ भी हो, तब तक जारी रहना चाहिए, जब तक हमारा एक भी प्रतिनिधि जीवित रहता है। मनुष्य और अधिक कुछ नहीं कर सकता है, लेकिन इससे कम करना विश्वास में कमी को दर्शाएगा।<sup>10</sup>

सविनय अवज्ञा आन्दोलन महात्मा गान्धी का भारत में दूसरा बड़ा अहिंसक प्रयोग था। स्पष्ट है कि अहिंसा का प्रयोग इस बार पहले से अधिक अच्छा रहा था। अहिंसा के माध्यम से जनता में पूर्व की अपेक्षा कहीं अधिक जागृति आई थी। न्याय और स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए जनता बड़े पैमाने पर सविनय अवज्ञा के मार्ग पर बढ़ी थी, जो एक अद्वितीय ऐतिहासिक घटना थी।<sup>11</sup>

अहिंसक आन्दोलन के लाभ-प्रेम का रास्ता अरिप्तयार करने से बहुत से लाभ हैं। जहां प्रत्येक हिंसात्मक संघर्ष अपने पीछे कटुता और प्रतिहिंसा की संभावनाएं छोड़ जाता है, वहां

सत्याग्रह की पद्धति से कटुता दूर हो जाती है और परस्पर प्रेम का विस्तार होता है। इससे प्रतिपक्षी की आत्मा निष्कलुष हो जाती है। सत्याग्रही भी नैतिक दृष्टि से अधिक सशक्त होता है। गान्धीजी यह चाहते थे कि किसी भी अन्याय का प्रतीकार करने के पहले सत्याग्रही को आत्म विश्लेषण के द्वारा अपनी भी दुर्बलताओं, भूलों एवं दोषों का पता लगाना चाहिए जिनके कारण अन्यायी को अन्याय करने का अवसर मिलता है और वे हमारे विरोधी बन जाते हैं। हर व्यक्ति स्वयं अपना ही मित्र और शत्रु है। ऐसा गीता ने भी कहा है-

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।  
आत्मैव छायात्यनो बंधुरात्मव रिपुरात्मनः॥

गीता, 615

जब वह अपने दोषों को दूर कर अंदर से अपने को सुधारने का प्रयास करता है तो सचमुच वह अपना भी भला करता है और साथ-साथ दूसरे का भी।

अहिंसात्मक संघर्ष का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह विरोधी को एक विचित्र दुविधा में डाल देता है। यदि अहिंसात्मक आन्दोलन को लाठी, गोली और हत्या द्वारा दबाने का प्रयास किया जाता है तो अन्यायी तटस्थ राष्ट्रों की सहानुभूति खो देता है। इसके विपरित उनकी सहानुभूति सहज ही पीड़ित और दलित व्यक्तियों के पक्ष में जाकर उसे सबल करती है। दूसरी ओर यदि अहिंसात्मक आन्दोलन नहीं दबाया जाता है तो फिर आन्दोलन दिनोदिन शक्तिशाली होता जाता है। दक्षिण अफ्रीका एवं भारत में सत्याग्रह के कई प्रयोगों में गान्धीजी को यह अच्छी तरह देखने को मिला।

गान्धीजी ने सभी प्रकार के अन्याय, दलन और दमन के विरुद्ध आत्मशुद्धि पूर्ण अहिंसात्मक संघर्ष का प्रयोग किया। वे अपने दुःखी और दलित देशवासियों से बराबर अपील किया करते थे कि सर्वप्रथम वे अपने और देश के प्रमुख सामाजिक, आर्थिक और नैतिक बुराइयों पर आत्मनिरीक्षण के भाव से विचार करें। फिर इनको दूर करें। भारत में गान्धीजी के दीर्घकालीन नेतृत्व में राजनीतिक आन्दोलन के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और राजनीतिक पुनरुत्थान का कार्य भी चला।

गान्धीजी का यह बराबर कहना था कि 'शोषण' हमारे ही पापों का फल है। यदि हम अपने पापों को दूर कर दें तो शोषण भी समाप्त हो जायेंगे। अंग्रेजों को दोष देने के बदले अच्छा हो, हम अपनी बुराइयों को भी देखें और अपनी आत्मशुद्धि करें।

जब कभी गान्धीजी ने देखा कि उनके अनुयायीगण आन्दोलन में उत्तेजना एवं प्रतिक्रिया में हिंसा की ओर अग्रसर हो रहे हैं तो उन्होंने उनसे अनुशासन एवं आत्म संयम रखवाया। यदि आवश्यकता पड़ी तो वे आन्दोलन को एकाएक बीच में ही स्थागित कर शांत होकर आत्मविश्लेषण करने लगते थे कि उनमें ओर उनके मुख्य सहयोगियों में कहा क्या दोष है?

इस नैतिक संघर्ष में आत्मबल के साथ-साथ ईश्वर में अखंड आस्था मानव की साधुता में विश्वास तथा सत्य और अहिंसा पर आरूढ रहने का संकल्प आवश्यक है। दृढ संकल्प से भरा हुआ एक साधारण व्यक्ति भी इस आन्दोलन का एक आदर्श सिपाही और नेता हो सकता है। इसमें संख्याबल का महत्व नहीं है। संख्याबल से तो कायर लोग प्रसन्न होते हैं। वीर लोग तो स्वयं अकेले जूझने में गौरव का अनुभव करते हैं। इसलिए गान्धीजी मानते थे कि यदि हमारा साध्य शुद्ध है और वह सत्य और करुणा पर आधारित है फिर धीरे-धीरे इसकी शक्ति बढ़ेगी और इससे महान् से महान् सामाजिक और राजनीतिक आन्दोलनों का श्री गणेश होगा।

### संदर्भ

1. कुमार सतीश (2006), गान्धीवाद: विविध आयाम विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी उत्तरप्रदेश, पृ. 3.
2. यंग इंडिया, 23 मार्च, 1921.
3. यंग इंडिया, 30 जून, 1920.
4. यंग इंडिया, 25 अगस्त, 1920.
5. Speeches and Writings of Mahatma Gandhi, i`- 489.
6. Thus Spoke Mahatma Gandhi, 1, op. cit. i`- 118.
7. हरिजन, 18 अगस्त, 1940.
8. यंग इंडिया, 04 अगस्त, 1921.
9. Speeches and Writings of Mahatma Gandhi i`- 729.
10. यंग इंडिया, 20 फरवरी, 1930.
11. रविन्द्र कुमार, महात्मा गान्धी और अहिंसा पृ. 162.